✺ 9 जून 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ✺

✺ **ज्ञान-**

1] जितना कर्मातीत अवस्था के समीप आते जायेंगे उतना अंग-अंग शीतल, सुगन्धित होते जायेंगे। उनसे विकारी बांस निकल जायेगी। अतीन्द्रिय सुख का अनुभव होता रहेगा।

2] हम आत्मा भी शरीर द्वारा सुनती हैं और परमात्मा शरीर द्वारा सुना रही हैं– यही घड़ी-घड़ी भूल जाते हैं। देह याद आती है। यह भी जानते हो अच्छे वा बुरे संस्कार आत्मा में ही रहते हैं। शरीब पीना, छी-छी बात करना.... यह भी आत्मा करती है आरगन्स द्वारा। आत्मा ही इन आरगन्स द्वारा इतना पार्ट बजाती है।

3] बाप आत्माओं को ही पढ़ाते हैं। आत्मा ही फिर यह नॉलेज साथ में ले जायेगी। जैसे वहाँ परम आत्मा ज्ञान सहित रहते हैं, वैसे तुम आत्मायें फिर यह नॉलेज साथ में ले जायेंगी। मैं तुम बच्चों को इस ज्ञान सहित ले जाता हूँ। फिर तुम आत्माओं को पार्ट में आना है, तुम्हारा पार्ट है नई दुनिया में प्रालब्ध भोगना। ज्ञान भूल जाता है।

4] विश्व का मालिक बनना है तो मेहनत बिगर थोड़ेही बनेंगे। घड़ी-घड़ी इस प्वाइंट को ही भूल जाते हैं क्योंकि यह नई नॉलेज है। जब अपने को आत्मा भूल देह-अभिमान में आते हैं तो कुछ न कुछ पाप होते हैं। देही अभिमानी बनने से कभी पाप नहीं होंगे। पाप कट जायेंगे। फिर आधाकल्प कोई पाप नहीं होगा। तो यह निश्चय रखना चाहिए– हम आत्मा पढ़ती हैं, देह नहीं।

5] परंतु सदैव कोई याद कर न सके। अगर याद करता हो तो पहले से ही कर्मातीत अवस्था हो जाये। कर्मातीत अवस्था तो बड़ी जबरदस्त मेहनत से होती है। इसमें सब विकारी कर्मेन्द्रियां वश हो जाती है। सतयुग में सब कर्मेन्द्रियां निर्विकारी बन जाती है।

6] बड़ा अटेन्शन से सुनना और धारण करना है। कहानी तो इज़ी है, जो गीता में लिखी है। वह कहानियां सुनाकर कमाई करते हैं। सुनने वालों से उन्हों की कमाई हो जाती है। यहाँ तुम्हारी भी कमाई है। दोनों कमाई चलती रहती हैं। दोनों व्यापार हैं। पढ़ाते भी हैं। कहते हैं मनमनाभव, पवित्र बनो।

7] क्योंकि काम महाशत्रु है ना। एकदम गिर पड़ते हैं। इस काम विकार ने सबको वर्थ नाट ए पेनी बनाया है। बाप कहते हैं 63 जन्म तुम वेश्यालय में रहते हो, अभी पावन बन शिवालय में चलना है। यह एक जन्म पवित्र बनो। शिवबाबा की याद करो तो शिवालय स्वर्ग में चलेंगे। फिर भी काम विकार कितना जबरदस्त है। कितना हैरान करते हैं, कशिश होती है। कशिक को निकालना चाहिए। जबकि वापिस जाना है तो पवित्र जरूर बनना है।

8] बाप सब कुछ बतलातें हैं। बाप से कुछ भी मांगना नहीं है कि ताकत दो, शक्ति दो। बाप तो रास्ता बतलाते हैं– योग बल से ऐसा बनना है। तुम योगबल से इतने साहूकार बनते हो जो 21 जन्म कभी कोई से मांगने की दरकार नहीं। इतना तुम बाप से लेते हो।

9] बाप सबसे बड़ा सर्राफ भी है। सोनार, धोबी, कारीगर भी है।

✺ 9 जून 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ✺

[2]

✺ योग-

1] ऑफिस आदि में भी अपने को आत्मा समझकर कर्मेन्द्रियों से काम करते रहेंगे तो सिखलाने वाला बाप जरूर याद पड़ेगा। आत्मा ही बाप को याद करती है।

2] अभी तुमको अपने को निराकार आत्मा समझ निराकार बाप को याद करना है। यह बड़ी विचार सागर मंथन करने की बात है।

3] अब तुम बच्चों को याद सेही पावन बनना है। याद की यात्रा बहुत-बहुत करनी है। इसमें बड़ी मेहनत है। याद करते-करते कर्मातीत अवस्था को पा लें तो सब कर्मेन्द्रियां शीतल हो जायें। अंग-अंग बहुत सुगन्धित हो जायें, बदबू नही रहेगी।

4] बाप कहते हैं मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। गीता के अक्षर कितने क्लीयर हैं।

✺ धारणा-

1] मीठे बच्चे– पक्का-पक्का निश्चय करो कि हम आत्मा हैं, आत्मा समझकर हर काम शुरू करो तो बाप याद आयेगा, पाप नहीं होगा।

2] अभ्यास करो मैं निराकार आत्मा निराकार बाप की सन्तान हूँ। सब कर्मेन्द्रियां निर्विकारी बन जायें– यह है जबरदस्त मेहनत।

3] पहले-पहले यह बातें पक्की करनी है। अपने को आत्मा समझना है और यह पक्का निश्चय करना है।

4] अब तुम बच्चों को यह पक्का-पक्का निश्चय करना है–परम आत्मा हम आत्माओं को ज्ञान दे रहे हैं।

5] पहले-पहले यह बहुत-बहुत पक्का करना है कि मैं आत्मा हूँ, बहुत हैं जो यह भूल जाते हैं। अपने साथ बहुत-बहुत मेहनत करनी है।

✺ सेवा-

1] बाबा ने कहा भी है– मेरे जो भक्त हैं, जो गीता-पाठी होंगे, वह कृष्ण के पुजारी जरूर होंगे। तब बाबा कहते हैं देवताओं के **पुजारियों को सुनाना।** मनुष्य शिव की पूजा करते हैं और फिर कह देते हैं सर्वव्यापी।

2] कहानी सुनाने के लिए ही तुम प्रदर्शनी वा म्युज़ियम बनाते हो पांच हजार वर्ष पहले भारत ही था, जिसमें देवतायें राज्य करते थे। यह है सच्ची-सच्ची कहानी, जो दूसरा कोई बता न सके। यह रीयल कहानी है जो चैतन्य वृक्षपति बाप बैठ समझाते हैं, जिससे तुम देवता बनते हो। इसमें पवित्रता मुख्य है।

3] प्रजा भी जरूर बनानी है। तुम्हारे म्युज़ियम आगे चलकर ढेर हो जायेंगे और तुमको बड़े-बड़े हाल मिलेंगे, कॉलेज मिलेंगे, जिसमें तुम सर्विस करेंगे। यह जो शादियों के लिए हाल बनाते हैं, यह भी तुमको जरूर मिलेंगे। तुम समझायेंगे– शिव भगवानुवाच, मैं तुमको ऐसा पवित्र बनाता हूँ, तो ट्रस्टी हाल दे देंगे। बोलो भगवानुवाच– काम महाशत्रु है, जिससे दु:ख पाया है। अब पावन बन पावन दुनिया में चलना है। तुमको हाल मिलते रहेंगे।